





मध्यक्ष १६ वर्षित म्यून प्रमास्य । १८ म

ग्रस्टिमिवनयाप्य स्तिवक्षामव्यल्य मधलया हण्ड्रभुल्डा कुरा प्रभानम्हर्वभ उद्भान अल्ये इस्ति कार कियर के स्वति स मृशिवाकार हिचुपरान्मा हिडाभाराक्य विकास भानत था। विका पुरव् अप प्रभुद्धिन्य अप यह विक उलमालिन विद्यम् नक्ये विकलम् वेण इन्यान र्शामयम् उसीव 103300 5काये 3 | उनुप्रियद्भे स्ट्री जायानं यज्ये था। मुउनुभद्रगों अक्षिउये धुभू चाउ गुरुष्याक्षयान्यभाद्या भारति पा कलमा युक्नव्य भप्र उनव्यक्त भिष्ठ भिष्ठिक व्याज्याति स्त्री सिविविक्त स्त्री सिविक्त सिवक्त सिविक्त सिविक सिविक्त सिविक् भायभा नवभभुक्षिपभुवि विषयमव्य भे वस्य किभयां मैं हे उन्याल डिपिश्यम द्रार्थ है है ने वीरन यक्स रुक्रवन्ये रङ्ग इस्क्स्युग्न अल्ये क्रुलस्ट्रिनिहीय्य ध यु निय नव इ अनुभयु सु छत्र भूगमसुगर ने में हैं रेन माजयज्ञ म्यनित नेक गाउँ न नपद ३ वतः धनमका मियुविहेमेंन चितुमद्भ दिसंपुड: मिन् रेग्युमय:कृद्र: भेर्ने ल वं उद्या मिन्द्र भद्र गाँच ब्रह्म व्यापनिय मित्रिभेयुरं उस्ते हेर वे से विषय भित्रि शिये क पालिहार्न्सकादे है मित्रिसमित्रिस हीया है उन्भेग मासा पिउयए मं खारे वित्या मिन्द्रिक मिर्देश पि उडिर पिये

त्रः प्रदर्भ प्रमुक् प्रत्ने भग्यवक्षिक भंगके यस किउमी नुक याजिक में मिड्क मं मिर्च यहें उद्यापि मिनि के एक भान लिताउः ॥ भूल्लेड्रप्लभाष्ट्रवी गड्योग्नेव ध्यान्त्रले भिड्योगिनि उपलयक्य विष्या भिन्नः में द्वारि भारा पिभनेवि युव निम मद्भि विभिन्न कि विश्व कि वि विश्व कि व भूखाः भिक्रयेणिनिभेषाह्ने मुद्रम्भरूपम्ब्रम् प्रथणत्रापम् उर्पन्त द्धनित्य विच्या द्वार मुक्ति विभी अयोगनीयंगा विभागि विक्षा द्व न हुअलिकिका भवमित्र भाषाया मित्रभारि अपराया ही भेष द्वलयम्भित्रद्रभुन्म थया मित्रद्रभुभुउर् मीयण्यू द्वलया म मीयं पुरल्लिय मारे भुक्ष स्वी ग्या महा मुहेरवा मी नाम उस्विक्न्यभाग मुद्रमंगर्नेने वीग्रामा भ्रम्पूर्य कारि नरापड्र उपल्येड उन्यापड्रविविन मित्रियन मुक्रवन्

उन्भाराने में में मीप्र हार्व भुव: नवह मन्के हे । यमग्रित इ भूयम् भव्यभाष्ट्रभय्त्रे प्रदेश हे स्व स्व हम् भूवर एए से भवे वि म उनिविध्या भावापुर भेराम् अम् त्याम् निवासिका वियम विषयक्रणलम् म उद्यु गडनेव इह्वः धः मिव्य ल्डि हेंड्याइक्नेल ने बर्डिय न्या मिर्डेडेन हेंडिड भेगि इड्रिवेच निम्भुवियम् मन्कि क्रियेडामे निड्लियंडे थ उभिरमित्रियार्था येएन नियम्ब्रिये उभन् भिययित मह संक्ष्यहिदिनव्भित्तिष्लभूस्म यस्कृ इत्र में भारति स मस्ति विन्यद्भान्य स्वयस्य द्वार्षे गरे वियानेन् हत्वय उभाकि : क्रेंड्सं यु उउ अट्टिंस्क्रिक्रिय व्युवसी पाइनिक्रिर् नि लग्धानं उभेदेवामा अर्के रवसंद्वित न्ति उद्दालकः परः भ सणका लभवया नाभानुमा गणना भारत रिन्मनूल अरल्य उभड्मि ॥ CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जिन्मः मन्द्रकृत उर्ध्वभेतिष्युरं भ च्युरं विषय ॥ अने समुग्रलंग उर्ध्वभेतिष्य भाष्ठ लेखेरमण्डलेलिए इमिन्दिनिक्षिणले विविद्ध प्रमु विपंत्रहरूये मृिक्षित्रिद्रम् उद्यये मित्रिद्रभण्डभवने दीपन्यु द्वलये दिय गः अल क्रें जी जी मित्री भय जा यह है लें क्रिक्न जम मुक्तिमिषयान कलमध्यिष्य श्रूकिक्व भर्दे अ भिडाइ कि हम् भूकं भयरिक्नं भन्द ए न्युकी पत्र मुस्क हरवसे भेरमुरी भारत हराव ही नरक लड़ मिथि में दिय क्षित्रम्रायेड ॥ यन्यया विन्ता भुरायि कुक् उत्न पर कल उइम्इ लवल महर्द्व सम्ने भूलयमितियनिक भेषिगने क्मिनि : निस्कृतिहडा निग्निविश्मानि विकारिश निमुक्त निविष्ठण निएह्म्यणा मिर

क्षानिक प्रतिकार कान् अना कि मान्या का वित्र का कि मान्या किक्पानिस्द के किंही में नाविष्ठ पास १ प्रदेश कार र्यभविषित्रं एप्रमुद्रपार्थित्र प्रमुद्रम् प्रकारेमाद्र हरव युन्ध नेपण्ड यय वित्रका पित्रका दिस् हिकालम् पार्कमवध्यन्य मुस्स है ने हार्यम १ उन्न णीर निरंद विद्र दिश्वभाउरभा विष्ठ कुल्मेक्व इ कुल्मे ।यहप्रक्षेत्रम्। मुलेम्डकाम् संहान्तिपग्यान्में। का भक्ष क्रियमा । ज्ञान । उल्भयुन् वृह्म भाष्यायक ०१० एक वन्न ये के कि का एएडि धिउमी चेड्डिलके के ने म्डिसिशिया निर्मा द्वरमञ्जूकिमारंभाउमा १ णउहुरूपान्नवद्वावीय

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हमुरिलेगन चिउवाभिद्युलमभा नाइमिवक्डी प्रारंगान्यन् मिक्रमें हिल्ली हैं कि उभ भिष्टिमुलकाका प्रानुतिश्रीयाम् निल्हानिर्विद् एय ब्राफ्न अस् रिय अश्वे मा अस् मा भया अपिर लेयन पीउम्बाह्मश्रम्भा क्रिक्किक्मगीभगुविद्धारम क्षिकाक ने प्रवासिकारणा नानं वाक हिरा मिन्ये इप हरव्स = रामगुड्र मा वहा अन्तर्भाना नीलगरात्व र वामक सक्या दिय : भन्षा का भया विश्व भा अहम्रा हिंगा ग्रमक्वन क्षायहण्डिधियम मुलेम्डकाकन में नानिश्य याभा दिरिडेलम्डिफे प्राय में म इक्रांचम (भारे माइएचदरे क् नध्रवण्यक्रभांष्म ललयम् दिन्श्मान्यक्रभाषम् त्रिः मिरश क्रमेरियएक मसके भवाका "सक्रक प्रार्क भवक्रमा प म्बार्य के मायह स्कृषिय भे मुले में उक्रेमेंव हे बुनि विश ग्याभर गुत्यु हुडियां कर हु सुक्भ विडभी वि पड करवेक

र्द्या गलभुमा शिलामना भी उवस्तारा एक व्यामा द्वारा विमार्करामक्भायक्रम्। पद्गाहिषाम अल्डाकाभाभ देव न्तिभग्यांभी भक्तगामि श्रंष्ट्रं हीया सक्रेंच्या । वित उद्देश्यक्तान्न निम्मारिलंगना गुन्भी उत्तरक मुचु पलवा क्षायद्वास्त्रम् मार्भाष्ट्रभामुक्यूरे । विविद्या उक्तम्याय द्वाराष्ट्रभ मुले इडक गरेव हा वान वि पारामा भा उपनिस्त्रभद्धां भेदार ब्रेक्मी रिउभी रवे प्रवार क्षेत्रमार ह देशासन् हिंड उन्नेक्स वित्राक्ष तथा है ले ह्या कुर क्यांत म्प्रमार म्याममामिक क्रिक्र क्रिक्र मान्या क्रिक्र उसा उप्राचिमाणभू के भागभु क्रिय मनः भिद्या दे दे दिन है। मम्बद्धने ए श्रेड स्पेक्मप्रभूमा स्यूम भर्डी भएन उ विधानका इ उर्मेश्रण्यमः बद्धमें अलिकाल स्वर् उर्देश मुभन्म पन्भ मुहि । बिह्य भी बिहुन्मः में मुक्न मक्तिन्थः एसि एएस एम्सिविषय गहिसि करेन्ड मुस् भेरहार कव्यानप्राणिति मार्थे उन् अव्येड रिमुल्भू भने है । करमुन मित्र मित्र हा धवाविन भून स्पृतिन थिस

04E

क्रभंडेचीयर नामकंप्रश्च क्रमान्निनां प्रश्चित प्यमंत्रद्य एवं ने रेगकंकी भिन्मः ७९ ४ छिभ नेन्म् मान्या क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया चिद्रिक्या विव्धानक्रिम्मः १८ विश्वम्मित्रम् विधाक वि वेत्रभूककराभूनमः के इसवभूगण्याय भूवयमल भूड था प्रमर वस्त्र कलयावयन वित्र के दियं अवर्यक कार्सन्थः पवित्र के बिर्म ४३त्रामकः १०५ देभे इत्रम् एयणभन्भः। ह रिकार्य महाने के विकास के विता के विकास वक्षात्वरुगन्त्रभण उप्सम्यनियं ध्यनि पद्धार्यक्ष विश्वा विस्था एउसकर्मानः "इपकर् एभेडन्सियण्भिन्मः एउधुमा वसु उन्द्रथिन्यड उभे उने म्ह्या भिन्थः ४ डिक्किण्याम् इस्ट्रान्त विभी कि अवह्हितं क्या क्रांक्या (हम्याण्य वियन्त्रान

20+

मरावनंक रने किरोभनभः एडिमारी व्याव यो प्रमान्या उपन वर्डी परिवायवेण गण विषेत्रन्मभुम्बयाभिन्भः परिवासम् थिंडिकिन्य सुरम्भेडिक् निक्र लिंडिक्येडिकि वक्त पारं है होने: भार्ति वयनिमन्भः । रेंद्र विद्वाउन्भरः म्याभिन्मः विधमवभग्वर्भश्रमङ्गिनवय्रेन ३ इडड्यं ३ धामेदाक्षाव्यक्षिलाप्तंत्रभाव्याः दिक्वः विक्रमे । विक्रयभिनपुभिन्नमं विश्वष्टं यहन विद्या उनके अन्तर्भन नं भन्भागानी एडियाण ॥ क्रिट्क स्पर्वे कुउपप्र क्याम्भार उरा शक्त दिभक्ष मिवाने काण थानक निविद्यि मानुराउन्क्रम् प्रमुक् मक्ति विध्यभाष्ट्रक मुद्दादिक्रम् पद्मक भड़ेरा कित्र पद्मक एए हिन्तु पद्मकें म लिन यद्विनिर्भष्त्रग्राभामिने मुद्यानि मुद्रे भारति मुश्रापकन्थ नाष्ट्रेल गरित गुण्डी दे अब सम्मिन मम्यिनि हिंदमा न मुस्मिनिक्ष लिक्टरके निवृद्धये एने कर्द्ध मके मार्गिन वीउपमनम्भयभद्भनं मिलेश्रूद्रभदे हिर्देः हिंदिहा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नभार्त्तीवयाभिन्भः सुन्रार्द्धिम्भन्थक्रभाष्ट्रनुया कि उम्हेन्नः धुने प्रदेनं निक्विष्य प्रतिक्ष्य निम्नय नभः क्त्रय नं लय हम्याविहिष्क्रियायेड उद्देशह नभः पर्धिमद्भाष्ट्रनायनभः पर्मिश्रानि प्राये उमेरि थडयेत्रक्र नमः ब्रह्मणम उद्गीय मन्न क्रमण्ड न्मः मेममण्डलयन्भः उम्लिपउप विक्तेन्मः विक्र त्युवत्यम्या किक्येनभः विक्रमान्न्यानभः॥ क्तिक् भ्रत्यत्म प्रायेड उरुणि रुप्य महायनभः मह विडव्लाय विजयुड्यान पड्रेष्ठ विकेष्ठ यनभेः क्मिन्यु विनिवड्यं यनभः किक्यं वसम्बद्धां यथि उसने उइभवामिन्तर्थं देउसने भडायेउड्भाइस्र रहेत्त भागेउन्म रद्भनं भेडरम् नेर्द्रार्थिकित्रमा उन्पति हणवन्धस्त्रहरूक्ष्यं शिक्तायटक्रियनं भवा ये कलये विद्ये गाये नियह अनुस्य अन्हें बडे जहहाय

।।भन्म मुङ्ग्याद्वेगम्यायाम्भन्याम्णुक्यः अलिक्टाभुद्धः। विषये अर्थे मदायाना महामा अर्थे अर्थ ाधिषित्रे के इसमाज्ञ कुरावंत्र भूत उराव्ये अस्ते अस्ति श्र माग्रहाभयुक्तम् स्थित्र मानुकाव मुझा मानु दूस ण उद्यादिनं पिएण्ये । उद्याद्यात्मान वित्ती उर्द्धा । उद्यो भः वश्री की भिनमः पुरम्भे व श्री उन्ते माजा श्री उद्योग भने हरू कुर उन्ते स्वाद्या सन्ते । वणक प्रमुख्य कुर स्वाद्य भ प्रसुष्तय भद्भाय गराम उपकालक या वि देवस्य कुल म्भेभकोरिया उर्वे कारमकार विक्रिमिन्मर्रिथा क्ट्रेन्भः यु. व नाम्यतिन्यप्तु - न । नाम्यति न्त्र प्तु म- अवदक्ता पारु-ने अवदक्तक पारु-प- विनेक्तन स भाग्ना मा करू । कार्य भागा दे प्रचार भागे भागि विश्व अर जिन्द्रीतं देभनहरोषायां चेजि विहे दिएक श्रान्स पक्ष-अं मीनखप नेक्लनखप अंच क्रुनिश्र न्या सह नत्रका मेयसुर्गि ने लेयुक्नः पुक्रानः महिः भ्रामुक्त

047

उन् ेउउभनः ने ेउद्भवन्तन् नः उन् भरकनः भः वि हरा विश्वन पर पद्भन मद्भन्य निष्ट न्यून्य प्रभावन्त थरमिष्ठ नार्शे असे पाम महित्रमा द्वारना दिलिक्ति नाया निक् सर्यन्भः अ १३३ मध्य मार्क्षिक मार्मिक हेभाक्ष ने देंग्रेस विश्ववार्ष्ट भारत्ये वर्ष विद्यारे हें था विही भग भार मुक्टि उन्हें के प्रथा दिस ने साम्हें हें भारे के लिए गाए परिग्रह हैं विसी नर्के हिन्मू: विक्रीक्रीयक प्रवाह विक्रीक प्रवाण प्रके नमः मि जिल् एक्य बर्द्द्रभुण्यान्मः अ विक्रम्प यूम न ि द्रियमानाः विक्तिनिग्रियाय्यके ने विज्ञेषम् । भ ियु पर्यवे में पर हो जे जुदूर हे हो जैं अमर ग्रेमिट हिं अक्र ल्पम्द । विष्वे वी विद्वा मनन्य वत्तरम्यनमः ॥ उत्रः रीयगयां हे ग्रीं अर: विम्रिअ दे हे ग्रायनभः अ विकार है कु

विभूमगर्के म विच्चित ने नि उमाइकै प विक्यलमके व निर्वा थलहै र विभेद्या हैं के का परक्रायामा विभन्नसन्यनमः अ भुज्यान्त्र क्रीयुण्य क मलेश ने भद्द्रा न छ वियम के वा हि क्यामने उ छि द्वामन् । अहि छिही पिक्षण्य छिने अद्ग्य छिमें समप्त उउसुमन्धरान्म विक्रिक्र्यिक्ष्याद्वा वि मुमन्दिक्र लभी प्रथक्मवर्थं सम्भः श्रमुद्रहेरव्भी ० ने भुदंत परंयुक्त भिष्ठिं विद्व अपिनी वृक्तिका एउडिं परनाम्यं मितं ० भडियम् अरायेड जे भहिएकं अरायेड्न यस ।। कि माडी मुलक्यालाय हु मुरिका ।यह दुन के विकारिक क्षिउवामस्त्रा कर वर्ष्य वर्ष में र कल्ए उप्राचिसमा इक्वरर भ्रेंभिमु थिनी व्वीमिडिहिंग्बों उहावडी मुद्युया भ्रितिभी प्रियक रेंद्रीय किक्यानिवाय प्रियन उत्तर बहुद्र्य छेहीहर्म्याय विमिष्ड सिराविकप्ति मिराविकित्वर विभानरहे हिंद्रमुखदर् छ मुरायन भू छ भूर पुरुष के छ दूरमुख र छियुगुर्क्य ने छिदिनेइय भ छिकनक्ष्यम व शियद्व द्वार है।

CC-0. In Public Domain Derized by eGangotri

महत्यार्थे । भन्ने भन्न भामा कार्ये एति अवाहित का नवतीपपक्रमें लेंहीया अपरेन्सः अ रहेही दि कम्ले अ भ लिएक लिए ने हिम्मी मेरिस भी मेरिस का का कि कि 9 नि न्त्राय कु 9 भा शिमवन्य 3 9 क भक्त ये गामुख हम्ब्रम्म्यर विक्षेत्रि एस्त्रत्येष्ण्यनमः अच विक्षेत्रे यस वर्नी थी मु रिकें कि ने उप कि कि कि कि मार्ग थी ने उप उन्तियनथा थे इति क्लिक्सरथी क् जिन हर्व किए थी उ उम् मीमिलप गिमह विक्रीकक्मी व्यापारिक दिला भाषिममुग्याद्वक्टिन्मः ॥ भन् हरन् अल्पक्ष । किली मिहिर वनख्य दक्षित्मः अव उभिग्ना ने दे विश्वन भारतिका पूर उनक्ना के अद्रा के प्रकार स्पानिक के ने से भी भनार थ्यम्पर्विक्षीयं उभाभाष्यक्रित्मः अर्वितिक्रम् च मिन पर छिंहीनि कर भटी के छिंही भारी भन्न मर्थ उ

विही प्रमूचर प्रभूष्य प्रकृष्टिन्मः । उड क्रम्मीन प्रमू उद्देश विदः इट (मम्म्भूम् किलिक्ट (विक्र नव्यव भिन्मः मभारीमभन्यभारीत्र उः अल्कलम् विक्रीरम् म्यनभः अ क्रा चे किया क न्या अस ने न्या उस पर पक्ता प भागने उ स्कूक्न रं प्रिक्स भाष्ट्र प्रमुख्य विद्याम् भाग जलिक्नण । वास्तिन भप्त म्बद्धी व्याप विसिन्नि द्वानिष भारकहिनभः अ उवासकिन मु उचाह्यवन म के वास्थ्रन ने उद्योक्ष्यन् प्रे नेभानकन कर्ड ध्राप्तने उर्ड वनक्राति न हैं हैं ही बी च्रिप्मिनिया प्रकृष्टिनभः भष्ट के के क्या क री. अल्वमा अवकलम् अवंषक वि में दे द्वार के का प्रति के कि का प्रति के कि का प्रति के का प् ०५३ क्रियाम मुलेम्डकं ने एं क्येनिड अच्छनं विहीम भिडाल्य ने विही भित्रमें द्या विही भिन्ने कम्य के नवण्य विही एकन इय

विक्री गेर यनभः शेंहि हि भि यनभः व शिद्वरूप वे लगा वि भ्रम्थयं व्यानयं वेज्ञायं व एयनस्य उ विसी सी से हैं हिंदिनियाने मार्यस्थः अदिनियम् विन्याय विन्य उगेपाय विवस्तवार्य अनुसाउमाय अनुसानुरूपय क ॥ इ िंद्रीने प्रम्यनभः 9 इनम्इय 9 भ १ गिमायग्य १ दल्य १ १०० न ह्य १ १३ ५३ य १ भद्र नल्य ॥ ३ क्राअम्बद्धाना प्रज्ञायन् प्राप्तकान्यन्भः द्वायान्या। ि एउन्हें भेके वि. पिउन्ते । गिर्म जिल्मायुन्मः वे प्रभानाय वे प्रचन्ना मचें अवये वे उन्बार वे किन्द्र वे के मक्य वे काविष्याया विक्र मीभारत वे राजकी भादिङाय उस्तुहर दायनभः भामसर्य यो विमान

विक्रीक्ष्कलयन्भुः अकलन्द्रय अकलम इ एमकभाय- गज्जव अभित्रस रिंह मिरिष्ट्य अगमनेभय रिंह प्रमूप अवस्थान तन्त्रीभाद्रुउत्यं क्र पालम हरदेया तः विह्यास्त्र नन्भः विह्या थटा १६८नय १ जनकृष् १ गुनाप्य १ उ मध्य ४ ः॥ ३ विश्विद्याद्य ७०० वास्माद्यस्ति उपये हिष् वयनभः गम्बमान भें एक वज्रेगा । ३६ने प्रामिति मापग्यनभः अभिभलक्य अयमभाद्गाय अहेरत्य वेलल्सायन्भेयन्त्रेच्यं वेलेक्श्रात्मालन् क्मिदिउय भद्दे हे उत्य तुमः॥ उ नुबस्थिन अष्ट विह्नी में शक्तिमः अ विशेष प्राप्त मन्द्र मुख्य भार मः हेर्ड ने विस्तिन्यः न एक मिमा ए प्यान गर कर्ण दे किया पर है का वास है उर है से मुप्तल है न मिया मुद्रिन्मः वह अनः भीषानं विद्रीषी प्रभायनेमः अर्डे CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

do)

ह ५०उँ उनिविक्रिक्टि व उँ उना • उक्निने• उक्तिविका भव्डउम्भू ने ने भने महिन्मः भहि उक्त प्राप्त कट मुस् भूका कि भिन्मः रिके मन् १ र याभिनाः मार्थे म भर्याः भेडित्रे ॥ नुवान्त्रस्य ॥ विदः दर्ण न्यू मधुका क्रमवर्रास्याभन्मः मभाउमभाउमभाउदिह॥ उत्राचित मन्त्राय न्भः गद्भण्यत्मा विश्वसम्य न्य प्रवित्र भयक्षा उद्यापनेन विशालिदः दह नमे ल्युक्र के विदेश व अधिमान मभ उड: अर लिही मी निर्मात्मः उयभन्य उसे भग्नोहेन भे पर मियन्स ॥ उरे अष्ट प्योग्वा श्वास्त्र अपया प्रयास्त्र स्वास्त्र ब्लाभिवडा कि भिक्ती नवसी पन्यारिप्र ॥ एक् मी अमन्ह हिश्वम्याया नमः अ १ १ १ वित्र हार्यक्यायानमः मु १ ५ फ्रामन हिस्क युउये द: 3 हं भवड़िनाउम् अक्यो नि । अ हि उन्न एड हिए अवस्य भ इतिमान्त्र विक्षाय दे कि कि कि स्थानि विक्षा के कि कि लिइन्द्रधुक्य ने । वस्तिनं हस्तिन । वेशे वस्तिन ।

नं इतिहमा एक भी कर के एक प्रक्रिय के मार्कि नी कर मार् प्राचीशके निभावह शः वि द उपिट्ट शः दिन् ॥ विन नियाहा शः हिंड किता मिल्ल के किता है के मिला है के मिला है के मिला है के मिला है कि है क उ प्रिक्षेत्रातिक मद्भाद्य हार्थ विह प्रह्माद्य । प्रिशातिक मद्भाद्य हिं। ह उत्निह सार्क हेर्मारा । ति हमडा में पर वर्षे । विक्र महारा में क्ष्मिकार्य : हिंके असे स्थित ने नियाद्यम । एके ने नियाद्य स कि मदिविभित्रकि मादिक्षित्र कि मः उन्तरक्षि समाविक भारति मामहाराष्ट्र महान्यमं अर ।। व्यक्तिय क्र अच्छा भ विषयुक्त विषय विषय विषय इ.इ.से वामान्य क्यान्य सब्द्वारा से युवा ब्रह्म के अन्वयय असमय उप विश्वान स भिष्ठिउय बद्धार्थः बद्धार्थाः

वेददारावारी हो की वीदरादार व नियमला के दियाननाय 3॥ भक्ष हया चिडः भवा हा म्भयूज वस्त् मुहभूर हिंदी ने भच्छयन्भः छ निन् उय छ उत्त्य छे हत्नाय य छ मा भाराय वेभागमय वेशमान्ह वे मानुद रिंही में भोडं भारें भ चद्भम्युक्रवाभाष्य रक्षेत्रन्भः तंत्रेष्ट्रनिम्यक् मुबपाष्ट्रम्॥ ल्मिने इत्यद्भे वश्चवादक्रभाष्या लल्यसुरहिन्द्रम न गेर्ग्रहभग । यमुक्स इह मार् क्म व्यव भाग के भाग है। लमेरक्षणारुभवक्रमार् विक्रीयलद्वय नभः विक्रु माइ विमालका विकासिक विकास के निया के न गये डेक्लम् क्लेन्सः डिलिम् हिष्टिधरं नूलल्डिन ब्युडमिदिन्से व्यक्तिमः विवासित्रायम् किर्माना मुख वयवे ॥ वे मद्वारे क्रियन ग्राम्य दिले मना शिवक्षा यामे वामे ह्या कमा दा प्राम्य भारति हाया प्र लिंग भारति ल विद्वी गन्द्रयेनमः व्रेममा वर अपपान्य वेपलया निक्र िएतं इये वे धम्ये वे धिमिंड के वे ने ने ने करें वे विक्रिय ने यमा प्रकृतिकर वरमादिग्ये विक्रेननः विक्री अपनक्षिन्नेः मध्या । महिर्देशक्तरन न भूष्मार हिलमन । कुर्या उत्तर्था प्रथलाडिं क्रापिक निर्माण मानाक मानक मान भी नभा । अपने थे उन्हें के विद्युपन ये के बारा अपने के विद्युपन ये किया है कि विद्युपन ये किया है कि विद्युपन ये किया है कि विद्युपन ये किया है किया है कि विद्युपन ये किया है किया है कि विद्युपन ये किया है विस्कापटें क्रिंसिय क्यें वाभ

न

देउयाम्भारायान्भः १३ मान्भारभाराक गाउँ रूनुगुरुभव्राथर अनुकेम परिमानियान्य विक्व यमार क्रियनमः अल्य ह अन्तय जिल: नल: र श्वारिक्तम श्वकम्बर माजडार भड़ाल देन 3 परवाने प्रराहरणमा भाष्डीलभेक रत्रवासम्बान्भा राष्ट्रभत्तायाद्वेत भिर्देशकार्म लयल्पवीउम भाजभाउकभाउन्भा (स्वरपद्मभन उन्यन्भ भण्डलम्यायण्य एक्टरव्यव्य मन्द्रशासिक प्रहानिक नभः विमण्डासिरम्ड्रिक्टर्न्भः विमण्डिमित्यक्रिक्टर्न्नभः विमण्ड क्वमच्युक्रवराच्याः विषण्यचर्थक्रवराच्याः

विविद्यितम्बित्यके कट्रिक्ट विक्रिक्ट मान्य मान्य । उतिमपुक्तम् प्रकृतिम् प्रम्म प्रीप्यत् विभूनिकिनीवर्गाय मुद्रिष्क् भिरं भिरं उद्देशके मभट्टें भाइले बर्डेंने विधा एए जाने भाइमें नज्ञ व्याप्ति किया में किया भारति । भारति विश्व किया के सिन्न भी प्रमाणिय । भारति । भा लिलन्य रिक्सि भिवानि किर्मिक निएक प्रिति मडें विकित्यकेमर्पमण निन्द्र्याएकि धिडें प्रक्रिणनके कड़े अन्त्रभानां विक्रिधं क्रियां भूरा भूरा भूरात्री स्थ्या भुज्ञ न भिभाक्षणंग्रम्बीनणार्यद्वियवीविनीभा रिक्नियविद्वप्य म क्ष्यानिभित्रिणः भक्षेत्रमण्डीण भनिन्न अस्य प्रामेशिया उग्रिसेंग्यम्प्रिभनिहेरी वृतिनीय किनीय क्रायम्बिंग्य गाः देवी गलक्षत्रेक् पण्यान भक्तवं विलिनि कि कि के भार्था न अर्क्स हिरामियमं क्रांसकी किंद्रमे रीअपष्टि कहारा :-ग्रवहिंथर उन्हें हुने रें भ्योभिते प्रह्मीक्रफे क्रिक भन्नि मी दिग्दार भरता प्रमुक्तिया भिर्मिल विक्रिया भरिका रामपाइ क्लासरानन्यमा विद्याल किन्यन् भनित्र परि CC-0. In Puri Domain. Digitized by eGalgotri

भद्रभागम् अक्मी किंगभुगभा नित्रन्भ वहाधा क्यलका कामानामान ाल प्रालक निर्धा के प्राचित है कि प्राचित कर भारती कर कि नगरकी धार्मा ने इं निधे बिभान गर इस्सारी विम्न कार शाउदाव कार्यायम् मायक्याद्वर क्षेत्र नायक्याद्वर्यायक्षेत्र म विषय भित्रभिष्ठ के वर्ष मिया से विषय से विषय ल भक्त असम्बद्धान ने-विध्वेन्य-न्डणन्भःग्यान् ग्रायन्भ य । जिस्सारा प्राप्त में प्राप्त के महिन्द्र के प्राप्त के प्र यनभः अ १ विकानम्य अयः अ गलय प्रभद्रकालयन्यः प्रशाउउ प्रवास व विस् वार्य नमः अः वृद्ध यः चः वेनिक रः वेक्ने

हा भागवनाविक। हिष्- व्वन्धभिष्ठि उ . व भवकुरक भिन्ने नं भोने विक्रीभाने महिन्या विक्री मिनिक के भी मिनिया जलम्य भदलक्ष भ्राप्य कृष्ट्नभः भेट्ट उद्य मित्रद विश्वर्ने क्रिक्न नामपुटन निर्वा प्रतिकालका विकास भाषेत्र पित्र निक्राना अनुकल्पदेम् थ कार्णिय में में भेरी देश विक् विषय विक् मार्गिक वि क्रिया किए प्रितिमध्येएक मद्रमभुवा दिल्वित्नभग्नय व्य नथ्विम् भेष्यूभानन्भयम् मार्गभन्द्रयः भाउपमुक्ति वर्ष्यः लापेडा वरक लव पारंगुर विष्ट्र उरेवमक प्रमुक्ताव विकिति उउ: र जारमाण्टीपभाष्ट्रले भक्क अः जारेन नवज्ञयनभः अने विधं गरम्बरः अवे विने न्योग्रेशः वि वाभेद्रवे क्ये क्यूनिक के निक्र कि क्यून नव अबि छिये उद्भुष्य र देने छिन्यी हमयायन मः हि छिन वामन्यप्रह्य प्रें नित्र भेडेए अग्रे भक्तर ए तिता कि

्रेटी-

न्व विध्यानिक विद्युर्भिक क्षेत्रभयाची एक के ह्याची थात्र है लग्यी उनिम भः विने गर्गयेनभः गुरु के ग्रामी निहें के गरेनभः प्रकेरि विथे किक्मेन्यः मिलनि वेश्विये सभएनि वे भेरत्यः म्मलल्यं ॥

के कियारी नभः स्भाराष्ट्रये वेदिक्या विक्रिक्ति वे नमाने एड वे हिंभेरे क्यानि वे भेदिरे प्रभानि एडिक्ने एउक्ने स्था ले भिन्न माः म्झ्यारे चिलं देत्रनाः राम्यारे 95% म्झूद्र 9लके व्यक्त के कार्य निम्हिं के कार्य किर्म के प्रवास के किर्म वड्डयन्थः अवि भम्मिव्डइयं वह विक्रु इ.हि भयाउइ:नि कल्डइ: प्रहे नियाि उद्घार अपथाडरा एके प्रारिडक्यनभः प्रध्ये परिनव्यक्ताः नवादिक्तराभ विनिष्ठ उद्गयन्थःह विष्टं विद्युद्धः ह्या विना विच्युद्धः विविश्व पियर देन हैं के अह रें के वार है। इन्हीं के दिन के हिंदि हैं भमवक निहारिक्याना के गुरु मेमार्गिक श्वी विविद्यार हे. थार्यः छिरंशुमन्यनमः स्वाप्तारं क्र इनमन्यन्यः पिएल या क्रीनियमात्रये एक्यं हों क्रीकियनभः कर्रा रिक्रीक्रय मित्र मिर्मिश्च कथा मिल्ये देखें पद् लिनि क्रमां प्रिमें हिष्य जम्भूयक्ए विह्न मह्यूक् नेमः मान्ड उत्तरेह नमः म

क्याभाष्ट्रभार निनि ननि मनि क्टन्भः क्षाक्तिक्षकं नभः क भस्य मंद्रमे पाइनण्न विक्रणे भक्तपने नि र निवर्भिष्ठि मेर विकास विकास कर महका भूम ए विनिज्ञ स्थानव । मन्भव द्वाः

ल्लीच्यान्सः करः न्वतः जिन्द्यं जर्ग यिक्त वर्गी सक्या । उत्रः सिवः ५ ७ विन विश्व हैं ० वि यभाजक्ये विकल्पे हैं विकल्पे के प्राप्त के अस्ति के विकल्प उः विश्राद्यम उ मिर्सिभ्यितियो सम्बार्भ ए म सम् महरव्या भारह है च्याहे अमारह के प्राप्त के हैं हे. भंदाहे विश्व कि विश्व का अवस्था कि अवस्था वर्षः विक् मभुद्धः भद्रलङ्गः न्वेधते वदः अ हरवणइअनुनु भागः हरवेणार मान्या है। क्रिन्यु पुत्र उत्पाय उत्पाय प्रात्न क्रिक्षम् बाह्य भद् विषाय क्रिविवरण्य नाउरिक्विमार्य क्रिकिस्टिक्ष क्रियुर्भित्रस्थिभ्यशिक्रके या भावस्य लेनी अरून मी देशक सुम्र में हेर्ड कि। ये विजयने विद्राति से स्वार्थित । शिविद्यम् अपूर्य वास्तर

भवार्यात्रम्भावरार्थ एक्स्मिन्नभः उउ: माभरक्षेत्र ध ३ एकमसन न्यः विकाबुउद्युग्यद्वाय उम्राभारक केरवा य इपल्या भिरिष्ट्रणय विश्वमेषु उ मित्भपावनभानम त्भावण्ड्यष्ट्राभ विम्नाभाउद्ये उर्द्ध नव्दाय्याम ि उत्र प्रयान् कार् न व न्यन्त्रभुत्याभावम् । १६११ नण्य १ इणव्यात्रिष्ठ अभाविष्य १ अभाविष्य १ अभाविष्य १ प्रभामनेपार्भित्रभाष्ट्रियाद्वार्भाष्ट्रियाद्वार्भाष्ट्रियाद्वार् भिन्सः नुभा इकि भिन्मः विषया दिवा विभाग उ प्राचे हत देवस न्भमु हे दिस्कु न विलिद्र हा जिस्स्य भलनाउभवना विदेशिम्हणवान १ भडनायान १ वनसम् व्यापास ० वनामजमभागाभाइमावा । स्ट्रान्यमण्यहानप्रमण छि जुवाद्यानिवसम्बद्धार्यसम्बद्धाः नष्ट्रभाग्यकृपग्रा प्रभा निर्भन डिनयन मामाय कु द्वाट पाइनन् पामकुरा भ्यमयभा निवेद्यत्या विनुव्द्याम्यद्वेवभ्भार् भक्तियम भिक्रमामभामा एकवे दिलेग्नम समह

७ तम्प्रभागम् व शिनामा किनामन (भाष्यंभागोगि वि मा भारतं भद्र हरूत्वा ० तम्प्रभूमी नमुत्रमु उद्यम्भामे भगविष्टमः एतं हिस्या प्रभूतं विभूगा विष्टमा भाद्व मुग्तु । अनु । पार्द्व भारत्य अस्ति प्रमा माभवत्य सुरे एक । पार्ट्य द्व दिविद्याधारम् जपामकब्रम्यन मुक्तः ३ च इत्य वन्त्रविद्यान भारत्मात्रकार् सूर्म अन्माजित्रशहिलयनभी प्रवाहित्यापर यः भेडा क्यानेमण्डा क्याने माने कार्या माने व विधाः विधलन्त्रम् अम्मण्यक्तियां सः १ ॥ च भरा ५ र विध उस् हेर्ग्युक्सेयुने स्क्रिशियिश अन्य उ ॥ उडे भग ज्व पत्नम हे भड़प्रवन्त्रम् कर्णनक्षिप्य भच्छर्ड जिम्द्रिदियामीविषा हेर्बिहान्य महिष्यामान्य यवि अल्विअपि उवस् वि प्यवि १ जिल्या अंदर्गा भिष्ट हिस्बं हिं मुमिलग्लाउनय प्रभूति दे थर्थे प्रभाव विनिभा शिर्मन्ये मना लिस्काबनव उत्तेक में अल्प कुल्सा हामां अद्वानिश्व विद्याप्त सीराएं में व्यवस्था प्रिकृत्रिष्टियानान्यक्रम्वभाग्नाम् नियम् द्रवीभव्यद्रियाम्भभवद्री स्रम्भभभ द्राम्प्राधिर हर्या विद्वितिविनीभर्भागिदेके विल्ज्ञिये भीन हर्ण्यन जिन्नाव रेकार्याने निरु हर्त्र एनिप्यान्॥ उडः अवदीय छिन्न दय CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भुद्रम्य श्राह्म भवस्य द्विम्य हुन्य अन्य अन्य अन्य विश्व वि निविवासन्दर्भभुगार्मक्षित्र्रभूज्यााणो अन्देशम्द्रम् व मुन्दीमुद ध्वादना भाजस्त्रां च के प्रमुख्य के दिलेशन अपूस्त मायों के वीमा १ । इ वी कि भग सिर्माय देन भी विद्याय पुर का रह रें अपरमाहरातिक सरमहाराम् । । असी स्थाती रामक्सन । विश्व हर थीउन्द्रा पम्ना क्रिक्स स्मान्या माउड्ड भड़ारे वी मु म् ॥ अवी। वण्ड्रेवगदी स्कार नन्म कीए से विश्वेष रीम सद्देश श्री महार निया भंगोभवद्वेत्मभूक्भ विम्वलभभाद्रक्ष मुन्।। विम्वरी मान क्ये क्ष्मक्राभना, निम्मिणाजनश्याभाजको विक्षिश्मिण्याविश्वय मभना स्रि १॥ विचेत्रवर्षे भुद्रदेवी भुद्रत्व भन्द्र एण्यु या रूप छि हराव्य वृशंक न न प्रकृतक रक्ष्यान भेदमान भावण्य म्पूरे ॥यर विकित् । विकित् मश्य कट विम्नुस्मानम् निर्मित एमन्देन्डण्रियं दुिः गर्रिय विधिम्वमहेर्द्धः महत्त्रन्थ ज्यत्त्रस्भाज्ञाहणवत्रःथ्युमा अभद्रदेशकेसन् भद्यनग्रथम्युर

नियान्य के अपने भारती शिक्षित हैं का वेड क्यू के व्याप का मिय यसप्रिवाग्यापक्षं नुभः निभिज्यहेरव्या । एकं नभः स्थितिवर्" भवः बर्द नमुखबर्द सिंधे भेन यून्भः एके उद्दार ॥ चुरक्रि उद्दार रण्याः मध्ये अध्यानमास्याप्ट्रयुक्मभाराण्ये वियम्धे वियमक मुक् ग्रद्धान्यवस्थान्यक्ष्यान्यक्ष्यान्यवस्थान्य मिन्भपिक्यम् न्या दिन न्या निम्द्रिक प्रवेश नभः॥त्रारेएल प्रकृतिम्भिया न्युन्न ला त्राम्भान् विस्त्रिम्नुकर्णनद्रितास्मीक्ष्ठिभग्रागिषुरुष्णुणभनमन्भान् पस्ककान्यामा हार्वे हर्या हेर्या हर्या हरू मन्यू न्मान्य सम्बन्धान्य एकलकलकलम्भायग्रुवाल् हामनंगाराहे अयेतापाल्ये त्मस्यामन्यमः भद्रभ्यनिय्पतिकत्त्यणभ्नानः ॥उद्रः याष्ट्रयमभ्रयान म्कः दूरामेश्विष्ठालारेकके आत्राहि : मुस्दिम्ये भारते विजन क्षेरिने अक्टर्रिक्रमभूना सद्भद्रभू निम्मे : न्भुग्र विष्य ०३१ म्ब्याडामभद्भित्र नवर् भन्यस्थ्यमं ॥मार्याभी ॥व्याः उद्युचित्रपुरः भूल्पिः विरादम्भुष्यन्गः ॥ ज्वप्यान्भण्

CC-0. In Public Donlain. Digitized by eGangotri

क्राःभरः भ्रथत्मम् उवद्र म्रक्षियाः विद्यारण्यव भ्रव रिक्सालिनः निरापाराम्यराविः यसवप्रारः सम्पर्धिया यन पराह्म परमाललभया व्यक्त विश्व मुन्द्रस्मान् । स्वामन मिनः मिन्निय व्यक्ति वसाम् र व्यन्नियाम् केम्बभन्भर न्म चर्राचारान्य क्षित्र माना निष्य क्षा निष उक्षा का का हिल्ला के में के में के में के में कि म प्रायम् नामा पर्याच्या वर्षेत्रं निरवा है क्षित्र देशम् अत्याच्या न्या न्या विषया हिन्दिक कर्त्र माध्या भुगार्यवाभव्यक्षिण्यवाभन्ति ध्यायम्बर्धियः। भक्तित्र निभक्षियिणिगणनगरम् भद्यिणिगणअस्त्र अञ्चलक्ष पः हिलामनिलयाम्य विरुप्रमानुगाम् भन्गाम्बर् नणग्रा शिर्यम् विकित्त्रम् उत्ना भिर्मा अर्था मार्थ न्य भरम्भायभाभा भु उ निरंभेवप्य काण्याण भडमाय जिल्ल नुर्भाग करान्यः प्रमास्यावस्यात्रात्राक्ष्या नम्भाष्ट्रयान्त्रयानगण्ययम्। अत्राक्त्यान्य मान्

निर्वार किर्वेश किर्मा किर्मा किर्वेश किर्वेश किर्वेश भूवरः रिक्य प्रतिकलकमा युक्य भाग कि गणः भिरुलय कर्या रवस्थित सम्बद्धारम् सम्बद्धारम् अनिकासन्त्राधनामित्राचिए दिसल्याच्यास्त्रास्त्रास्त्रा मिरालयुः विश्वतिक्रमं येथेगः सुर : ग्रेड पर् भिने ग्रेमेश क्षेत्र इत्र के विषय महा सर् । यय देश हो । विषय विषय है । क्विपबार्षिकः विश्वमितियाचिया दश्मिन्ययालम् मुहरे कमानवार्न अभापेलकथ्रिष्ठारे । अनुसाक्षिल भावन भनाराभुमीलकः भूगिरिकाभधन्य । वास्क्रमाधु इया येमविष्ठ्र पुरस्य विमान्द्रविष्टम् का भेरे विश्व करा करा विश्व ग्रामु: अउन्ययः भिष्णलेखायम् मुद्रमाम् निम्प्रेटः भ किले निरम्म्य छ। हि भिल्म् युवि कि अन्द्रिय द्वार्य पर यामाउद्यास्त्रम् । अन्य विश्व स्त्रा स्त्रा विश्व स्त्रा स्त्र उदिए: संिधिनस्त्रोत्र भाष्यवनुष्ययेन्द्राः सुर्भुः मुश् म्यः मूण्यम् अभिक्षेत्रयेयः । गरण्यये प्रनम्मिनः भूमिन्यायस क्मनप्रमिवपर

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मार्थित किंत्रमान कि त्रके भुर भयमक्रम्पविद्वश्चाक्रममा विष्युयायम्बरमा भारत् नियुः भिक्र व प्रिन् अन्य दुक्क व किनेयम हिंदी मिने येग भक्त करियों पर प्रोणिनेवाधिकान्यवाद्वीत्राच्यायम्य विक्रियस्याः भारता गरिक्तिश्व वार्धि प्रतिप्रति वार्षित वार्य वार्षित वार्य वार्षित वार्षित वार्षित वार्षित वार्षित वार्षित वार्षित वार्य म्प्राधित वित्र विकार के विकार में स्वापित के निष्ठ स्य स र्वान्वयर्यम् । य पुरम्भ उत्त येपान प्रवादिन । येव उपमन्लये। उर् भनियम्य भिरभा दासम्मय पिनः समा कः भिन्द्रन्थान् हर्ष्यास्य सन्दर्भन् उर्धनुभरम् । वेपदाश्यानकम्भननम् मुर्गायम्भन् उन् अकृषिलम्भाराम् व 五中 वकः भाजनायान्य उभवन् शिभायान्य भारतन्त्रनाभागार्थ भर्दित्यं भूलयु भूल्य इस्त्र्यं उसे ति सिंधुराष्ट्र शिनारम्बरा 0160 प्तविक्त प्रवासिन निर्मा निर्म 300 न्यस्याक्ष्यये गलवेणान्।विच्याभ रक्षाक्षानः।विच्यानि किसिकः कुण्डः समक्रेस्यनच्यान्य सम्लक्ष्यन ए कि लिस्य वेडयेणनः अञ्चन्निम्या मित्रपि भुडये उपूराधयान भुगादिक्र वार्तिक देश कि । भिर्मा अभिराज्य विष्या CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

विकृत्याम्युन्ने गनगृष्ठ्यभाषित्रभन् उ.मि.नभिर्मान ट्या महक्तेमदन्तः भदन्ति दिवायु क्रियामवीदन्त उनि भद्रत्मेद्रयशीवः भक्तिहतुद्गान्यः उनके शिभावेह रःक्तनिभम्दनलः उपि । मुप्रांद्रन । पर्यम् रस्य व व नाभा । विष्: प्रमुम्ब मार व के व क्रिक व भारत । यं प्रविष् भवाभवाक टिकि येनियु डिद्सुडिगउपयम उबिश्विताजात्मभाडि व्रेमक्न उभव द्याप्रभयाद्रभद्गाय नव्द्रभुभ्यत्र हर्वाषाप्रभा नवः ३ ५ उसविभक्त भाग्ने भाग्ने प्रमान मार्गे उत्तर्विणीन भाग्न थानिवाभिन्भं प्रदक्षक्रवनाहिकानिक्मभुतिक्रिक्क्भो भवत्रग् उद्यापन्न निरुद्धे ग्लंब म्यान या या या प्रिम् ए अहिन म्यान स् विस्डानभेषि हिमिक्षिकाः सरम्गणकि थिडी पत रगण्लयः उरम्नीनमञ्जानगाउनमनः भद्रभिष्यमञ्जू क्षुक्रभंगीः ननत्र्यभद्ध उल्मिव्यानभग्यण उभवश्यिभ या अप्रमेशु वित्रमक्भी मूर्पि छ उहे वि स्इ उत्र भ्रमभू प्रार्थ ल मिर्नेडल वज्या क्रिक्ट क्निमें वहः क्रिप्रीडी ध्य दक्षिहः मृथभद्रेन श णिप३ र भट्टा महाइम्भुपर् लाइ। ४३ िवस्ते ॥ CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मिने प्रिष्टिशिल्भे प्रेपिति विद्या व

ण्यिकिसभन्तिय विवेषभूमवग्रह्यन्भः एडिअस्यमभूमव मस्य । मयवनं । कालाधिनइभच्द्रियग्रहयम् वक्षा प्राप्त विश्व अपमे कि उभी का न्यु हन्य अ प्रभाविक नृत्य भिन्भः छिपनम्सभेने प्रकृष्टि प्रवीद्भा ए प्रवेतराजाम उ विश्वयह्ने प्रवीतक्षी नामक्ष्मयण्ये गोद लक्ष्मभित्य ह विकाश र विद्यानि नाः विन्निय प्रकार वार्य भन्भः मुखण्डान्। भवेषारणग्डाके विश्वन्त्रभन्भिषु गृहणदाण द्वम दिख्या देश हिंग्से हिंग्से हिंग्से हिंग्से विस्त हिंग्से निमः सुष प्रवाशासाम् मिर्मित्तन्त्र भूगन्कम् मुग्युक्रम् प्रवाल विद्ययं विष्यां मिला दिलामे अर्थिय ग्रेमिन सम्बन्धान अन याने वर्षे प्रमानिक में या देश हैं कि वर्षे कि वर वर्षे कि वर्षे कि वर्षे कि वर्षे कि वर्षे कि वर्षे कि वर्षे क भा उपश्यितिम् ने उत्येक्ल्यम्भद्रभ विकान्यद्रम्य उभारत र्थानः मं भिराप्ट हरन्य उ मंद्राप्ट्नभः॥ उड्डमन्ने न महस्या ल्हिल्यं अच्वे इन् असिंग्ये अस्ति के असि विक्रिया विक्र दिस् क्वमञ्चा ने उद्याप्ताः प्रभुक्तिगाउध्य विव्यक्त नामः विष् मुस्यनभः विश्विवनभः विश्वित्रमुगः गण्या मुलेक्मः भाउतः

09.

भारतमाः विश्व एकनस्य विश्वासक्त्या वि वीक्रिय विमी मिलिएन नह श्रीभा व विमान के विभागे अक्ष भवकालय विकिश सिन्द्राय विश्वाग गा थाय लिक् विस्टिय विक्वी अज्ञाय विक्वा विक्या विक् द्वायन्भः लम्बिष्ठ ॥ स्वतंक्थलमः ॥ विज्ञायक्यः । रं मयय विदे यभय विका निर्वाच विश्व विकास विद्यु विकास ज्वायग्रा विश्वासम्य विश्वकृतः विद्वानि मही धूरिमा आ न्यभक्तः॥ छेहीची चेक्क है के भारति है के के भारे एंड एंड अहे उंत्यार वे पेल के के मान किया के में भरता के लिया है विद्वतिएयण्य विवेश्वहणयो विवेशहण्य विश्वविद्या विश्वविद्या थं अर्राइड विद्यां व्याप्तिर्ये वित्रकार्य वित्रकार्य वित्रकार्य वित्रकार्य नवरहर ।।इन्हें भ धारप । इसाउ मकुसम । उदस्य त तुस्य हिम्ह विद्रमं विष्यु व्याष्ट्र विग्ने विश्व देश देश उनाम हो एक राया प्रतिकार के स्वापन गहिला उस्ति है। इस है विषय कि विषय के विषय कि विषय CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मधनणाः विमनजनणा प्रयन्भः गम्किनः अतिकनः प्रत्याण भद्रथक्तनः उद्यक्ना क्रिएनणा भद्रथक्तनः । भव्रहे व्रिम मस्य दर्प नमः मज्ञान्या केन्द्राय । यद्वाय भाग्य सर्य मध्य नि बुलय भन्य मन्य प्रति नमः हल्दि उह्रय मिन्य भपिक रेया वर्षेत्रभंः॥ वृद्धप्रये विभद्यस्य भारत्निम् एलक्षेमिति ।इन म्पेराक्ष्यं मन्मभक्ष्य मलकित्रम् इन्द्रम् र्राद्रम् रेराद्रम् मुबद्धीये विदेशिविशा दिन्ध ने क्रिस्निन में मिसिक्सिक्सिक वीयंगिद्रालक्ष्य क्षित्रप्ताक्षित्रक्रम् कावत्वीयंगिद्राल्ये धए मिसन्देन्स िक्रीराष्ट्रभागेशान्यक्ष्या भागिता धक्मे म्भारपुत्रे ग्रेंद्र लातिविधियम् भप्यक्रे रिकेल्य्याभन्भः दलभ गराम्लं कि देमनिगका निगम्परे दलेंगेदिल भक्त निगमि ल किस्पारम् भवकान्नु युद्दिनाय परियुक्ष भ्रायम्भा भवपक् भिनंदिक्न्योभ भूभीयम नावडी ह्व्य दिवय म्यथहि गीरान नभः मस्पर्याम्निभ् रिंग्डिनिस् रियानिस म्यप्राक्तिभिभम्भे गोद्रणाव्यकत् ॥म्यमाभगावण्यम चलना वीम लय निर्पा थें भिन लय दिन्भद्र दिन लय गहु परिश्व ।।।

ने.

लयहम् प्रमान क्राक् का का का माना माना हुन नक्षक् अ एय इलहा सर कि हिरा निकार मिया निकार कार्यान निकार क राया भारतिक ३ लाय मन्कलक ने पाय नाम क्रिया भारति पद्मवन्द्रि एयहक्री भद्रिक म् लयानुक्रियमेरे लयेश्वर्राहक गण लयंपाइकलण्डी र लयमु निक्रथलके उ न लयंपम्मम् क लयनक्राक्र नितः रायनक्रमाणम् थ लयभ्रमान्य क्रिके हेला विद्यादिव्यिथ लाय विद्यक्तिमा दाय विद्या दिस् धनार्वः १॥ लाय निक्शय लाय श्रुप्भय लायपा उसी किंउ ल यकात्रक्र लायप्रानुक लायप्रात्वक्रमङ्ग लायप्राप्त लायप्रया था एयने उपि उसक्षेत्र एय भिक्ष स्वाप्ति दिए म हुउ विमानवानाय भवी मिश्रह भवा दिसका युरे देवना द्रण्यान्य हत्य उ मलवन्मः स्रवंगम रिश्म प्रभारमञ्जूष विस्मार्गि विस्नु उस्रिश्माण्य भुत्रे कृत्यम् द्वा मित् यमम् नसम्वर्ममा यानिकानिम्पारिकारिकार निम ग्रिक्मम भयाके न्छर् चप्रक्रिंग्मा भिन्याचित्रक्रिंग्य भक्षनीमार्श्वस्थानप्राचाननक्षा अभिष्णभगपूर्ण CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

।हत्यक्ष्याअप्रथमिभद्वत्यिक्ष्य प्रथेनभः द्वियंनभः विभेनननभः एक भेर मेर्डिय मेर्डियम् निर्मान् नमः मुम्भनी यन्भः पुनः बट्ये भागा दर्भ क्रिकिंगीय किला मधक पथािकत्तन अब्द कर्न असिउद्देश्यान्म । क्रीयम्भू यूगिल्यु में पया विक् उम्राष्ट्र रुस्यम्यस्यानभः विम्भन्तिस्य विश्वाति विश्वाति । विभिन्धिय या विनानागारियनभः विक्रीम् रिया में के हम्युक्र पर भि व्हिंद्क उर्य द्वार ना ॥ न्यम् नायमं उक्य विक्तार वे । उनः म महान्या प्रीय १३ महावरा छर्ने। भित्र देहर्न् इस्टर्स् भाग अहरने गर केर्व प्राम्या अस्ति हिंदिक मर्ग के निक्र मित्र के क्षित्रम्यानिकारण्डे वर्द्वीर्द्योथप्रिकिन्द्रय्भिन्मः॥०॥वद्गास्त्रभूष क्रिक्न भः प्रमे । मुस्पूर्य । खना क्रिक्त क्रिया । प्रमान व इमए। मुद्र क्लनार देना हिंदिर कि के वन वह सुरय वित्रं वित्रे वित्र उभगुरुय विही में कि रें रेंगे ए हा क्रक व्यान क्षिये। अप्भः ॥ म्यभङ्कायभाउक्यिक्षान्यक्षः। अप्ने । थिः है। उभ्य

कित्रज्ञयम्बर्भाति उद्या । व द्वा क्षाया व देवा विकास कर्मा किं प्रमुखे सम्मा किं उसे हैं किंही मीन ग्रम्भर पार्वित्वी से प्रिक्षिण हम्म या विद्वारी भेट्रेट र उन्य म् अकृत्वरमाद्रिययम् वानामाय ० क्रियामाय १ क्रयामाय १ क्रियामाय १ क्रयामाय १ क्रियामाय १ क्रयामाय १ ग्रेशिक ने मार्थिक के क्यलेमहा है सिरासभम्य विमन्ति ही पया विक्रिक्त मण्डित्री में विक्रा पर्मा मुक्य वर्ष माद्र रहा रे के मिल्का म्युअक्ट्रनित्यभागक्य महावर (५३: विहीमी के मिन्द्रा क्रमिति विगन्भः रिक्सिश्वार्थः । अधिका वर्षानीने अपम्यत्र सम्भागा मकान्य महिल् महिल याका लिन विक्रिय में अभिया प्रमाणिक मुह्द 033 स्माराष्ट्रभूगभये छ्रेल्यर्डिस्यम्य हेर्न्यस्य रीय कि भाग के भाग के भाग के स्थान के स्थान के भाग क 

इत्र प्रश्रायकल्य भारकत्र न्तरा १ दर्भ में वर्ष भ स्वाम स्वाम है।। ज्ञान लः भे केः पिल्मीनवक दिम्म हिल्लाया उसामन्मवर नवस भारा उपाठि विह्याहरूक्सअङ्ग्रांक्रिनिस्राड्डीव्लिक्टि क्ष प्राप्तान् यभाएक मान्न कर्त्वा भाषा उत्य भाषा अ ॥ मुथ्भवन्॥ रियमनुक्याका अम्बर् विश्नप्रविश्व की मी भदनकी में प्रिक न्यय अने में अंदन निसंद छिड़ी भएलक सण छहा गर मनक्यामाया लिनि

विग्नुकरालामार्भा भेदेख्याक्राहिन प्रचराहिभवन्य प्रथ मयभयंत्रका नय इरीगाः ने जा भी वसीनवके दिया दलभावी उभा ग्रेक्न क्रमस्य उस् भूदल्य अस्ति क्रक्न प्रध्यम् विभाग इंग्सिन मिन्स्यान्त्मीका इंग्से भएगड हुत भाषीत्र्य भागकः विहीपुरिक्वित्नभावितीमितिहः परिक्वितीहः परिक उभद्भारे होरी मन्द्रकृथनिन हारि स्थानहा रियम रक्षेत्र महात्वर निक्न (थड: भार पंत्रके प्रकृम् वक्क डे अद्यापित कि कार्या भि न्भः रेडे म्यां हरूर ॥ म्यम्बन रिड्इ क्रिम्र महरू थिड्र हरत वर्ग्ड्रमुम्बर्ग्य माजिस्य मिभित उभ्योतिक मीव्यम्बी प्राप्त कृत भदिन्यभार्षिक्षा करने भीक्षित्रम् भारति विश्वास्त्र भिन्यम्या प्रिम् शक्तिमिक्तिमिक्तिका अधिक विकास ना हेरवन्भा । इंड्रिक मिन्धु भावने वे बर्य दिन न व्यक्ति वक्षाः भागः हैरवेता इस् भागः हरवेता रेखाः नर्का गाउनाः ता अक मिन पर वी मार्थ मिन भी है कि का हिम्मा मिन्य म्बी अपित्रमु मीमिनः श्रीयंश भीत्राभक्त मान्य भाषा

बिगारी माने में तर ने निका मानिय में में माने में में माने में जिल्या विकास स्वयस्था स्वया स्वया विकास स् 3: १ वर्गिति । रेमिला : १ वर्गिता : "र्मिति : मिर्मे विस्मिक्तरार्थे उत्लवायायाया भागति मक्तमा है अभागति विनिश्चिक्षय विकट्रिक्विश्चित्रक्ष्यान्य विद्वित्ति विश्वः मञ्जूष्य वि भिन्नायमभारत्स्य सम्मानभः थिन्नहरू वर्णक्यान्य सम्मान्यान्। अस्त दे विकासमा विकास तार को विकासिक किल मार विभाना वार विष्विभाष्ट्रियाक्त्रमाः इट्सिय्यहर्ति त्रारे विष्युत्रम् ३हेरवेणेइण्यक्षम्यमानिस्युनिम्यक्रन्थः मधनिवरय्य ॥ भन्दर्भः न्याद्रिय द्रि निर्वा वर्षे विक्ति वर्षे व यहत्रम्यान्यः विवश्मान्तिक्ति व्यानिक्ति विवश्मान्तिक्ति में ये वियाम के अध्याम विश्वर से में कर्ति हैन से अपन

भक्षरायु विक्षिप्रे उम्रद्वानमः विक्षा मिक्ष्य लिहिनमः वि निरम् हे । रेज वस्त हर्नियन्भः पिर्द्वित्र प्रायम् माज्यान् भारतिस्थान् भारिकः सद्यान गाउँ दर्धा अभिक्ष गर्मियोक्रक्रां सम्भाष्यम् प्रमित्याप्रस्थिपे धृति क्षितिया रिहित्व पपनका कि कार्य भिर्मा हिपा माने यान्भः छिक्र वर्षः राम्यान्य किने । अनु स्मार्थे । १५३ अनक्तमुरभूभाका अपनिवास अपनिवास मार्थित स्वास्त्र महायान महायान में। वेखर् जिया निपभव्याने प्रिक्ष है भन्न इ वर्षेत्र जिल्लाभन दम् अनक्षित्र विक्रिक्ष वर्ष है विष्यू के वर्ष है व भेमानंश्वयान्भः मभाउनभद्रहेज्ञ्या मस्यानिष्ड्रेडा हे रेवण्यये शा करण्डिणसुरु गाः पिक एनमा सीप ये डेडिनइस् ति विद्यान्त्र भि सम्प्रिक्षित्राधित्र मुक्ति अचे उत्तरा मिन्न उसन्यल ११ वि अन्यास्य निर्मा अपनि । अपनि । नयगर्यम वयगरन्थिभद्रहम्ड मिर्म्याण्यम 4 क्रद्रश्यान्यमा ॥ ॥ ॥ अडे अत्राचानम् द्रिके अक्षुनाम् भयी दिनिम 034 तिक्षे भारति स्वार्थाने का में राति विकास में रेडिं केंध्रणिम् उन In Public Domain. Digitized by Gargotri

स्रायम्भाव लार्डाने उने वर्णने मार्थिय क्रिक्र मुन्न अधिक म्थायंत्री द्वारा मिरा प्राप्तिक विकास के विकास के निर्देश विकास विनेशकवंद्वायि प्रकृतिकार्यात्रम् कार्यात्रम् क्षितिकर् । राजकार कार्या भारतिक स्वाप्तिक स्व म्डिसिक केर्या विद्या है स्टिक केरिया प्राप्त कर मिल माला हुन मान स्वापान मान्या स्वापान मान्या हुन हुन हुन मान महायाद्या होते विद्यामितिक : क्षेत्र क क्ट्रिमुखक्ट्रिक्निया भागानिया भागानिया भागानिया स्थान्यन्मः विकामें विविश्यास्य क्षितिकार्याः विद्रभादाताय भरमे भिउपकामा भर्य । तम्मा उसमा मुकाउद्या उ HIDELECKTOLENNI BEEN LASSILL BEER HOLESERA गमहाख्यिकेत्रयणयाहरम् ।इप्यं स्कृतिय । द्यारा स्यु च्यामभाभवेकयम्ब्यामम्बद्धामम्बद्धाम्य समन्य नभः॥ भ्यमक्ष्म परभण्यनभः विशय द्वाराष्ट्राया 

मंद्रपथी थापा

भः मन्यूमान्वल यन्भः। दिलानेके। विम्विभाष क्रांबाह्वीभन्नि निर्द्वलेश किं बुद्धा विक्न विकास किंग्य उहान्य वर्भभवं अग्य १ भग्या । भग्या भन् । भग्या भग्या भग्या वित्रीनंविभाक्षाके विरोधनम् धार्मिक श्रेष्ट्रे स्वर्गाभस्य श्रया प्रवित्र नभन् : मध्य है। महुउच्छ । जिल्लिक हिंदू । थि : हरवरोड रह मानिया क्यानाम् अपिक्षमित्रवाहः मान्यं रिष्ट्रः स्यान्यः अर्थे प्रमान्यः विमिष्ठिडि अंव्यान उक्य (१०) विक्रेश मिष्ठिक या निर्मिष्ठ के िकावित्रकालविधिकाभिक्षकाविद्ये अभये अगये भारे हि भर्ः भरडेल्थ्युके पर्देलिडिनिलीन्थिकः भिन्द्रभक्त्वाभिश्चाद्रश्या उरमुप्ता महाः रिलंदिकं । १५७: हेरव-म् इनमे जिगहः मा जेय थिन्द्रः भ्रान्भः अथेर ॥१॥ तिन्त्रियुक्ति १ विद्यमंत्रक्यि । छिंद्रें भ्रीणिक्ष्यपनितिश्वयुक्तं विकावित्र विकाल विमिधित् भक्केष्ट उहैरविद्युं भार्य भूरय १ प्राष्ट्रिभरः पर्वे एए प्राष्ट्रित निनें (५३: हेर स्ट्री भारतस्य भिश्वष्य उउनुष्य । महा विनेषित्रं थि हिन्द्र स्मर् मानिस् विस्मित्रिण के मेरिन्यं थि द

न्म

विक्राः भगन्मः भयः दिभयन्ति उत्तर भद्रन्या वसन्यन्भः म्पराके उड़ः थिन वह के उत्तर माने रक्ति नार नियम के मही देन उसाद हास्या संगान भः के ज्या के समान के ज्या नित विशिद्ध के विशायह के मिल्यह के मिल्यह के भारत के विशायह के भारत के विशायह के भारत के विशायह के भारत के विशायह १६. वृद्धेम हुन बार हुन के प्रतिहरू के प्रतिहरू के महाराज पहर. क्षायभ्यानभः विक्रीस्थिकारो भ्राम्भः उपापति उपाद्वार उउसेष प्रतिष्ट र माइया र हसाया र हारूया र प्रभागय र विश्वनि विज्ञ र ग्रथकित उर्देशिय उन्ने अन् सर्मित्र कार्मित्र के समानित्र ब्याप्त्यन्यः के विकल विक्री सी ने मी अप्यन्मः के ने ब्रह्में के के थयः उँच काराये उँचे प्राधिक्रभाग्य उँचे गाँउ उँ निस्नमाये उँनि विश्व के ब्रिहान्य किंग्ये किंग्यनमः अयम्पिष्ठ विद्व हिमाण्डिक्यालिनिधायद्वे भरित्रके स्वांने मनं निद्य भेनिएनर भयं भन्दरया भिर्भाष्ठ । उत्रे कि उत्पर्धा प्रस्थित िनं भ्रमहो ने विविधा अहन के उझ नंभी है धरामः के ने ने में मा ग्रियणनभः कुं चननुरु के एकिन्यु भे के निरुद्ध के भराई के वीग्रह

दं प्रस्य सः के ने आपहा ने उपपद्ध के मित्य हा ने उपपद्ध के प्रिया वह ने त्याच्ये व्याप्तिक विकार के त्या के मार्भिया के मार्भिया के मार्भिया के हं उलिवह • केंग्रेसर । है मउणभाग के बुद्ध । हि भ्रणभाग के लिय रिक्ष मं पद्माहणी के प्रकार के भद्मिस उर्च के मण्ड हा सुगय विही सी भद्ध किए में के बहर के पत्रप्रिक्ष के ब्रह्म गड़ के अदान जिस्ता कर के किंद्रीमिक्किएलिनिस्युंद्रभरिक्कियम्भेक्षेत्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित्रभागित् इनमित्रिविर्णं भरमय १ मार्भ पडंग्जिन १ अ १९ ३३:३। रियापाइ॥ हिमेश्रमंक वित्रा ने द्वार के उम्राह्म कि भाग अचत्र अचे उत्तर कि मन्द्रिक्य लिनिस्द्रके विक्रमयभाय भये पराप्त विक्रण साद भहि उन्हेंग्रेशहरइ द्वीण भिएण उस्पार ॥१॥ उत्राम्य सम्भाय विदेशीमः भेभाषानाः के विही ही भेना उन्हें नाः किही मी भेड़ कि है के कि य = उ। भ्रतिहिम उंशमनयो । उं उथायेन उंभने सनयो ३ उंभातिहि ॥ इं विभाजये .. उंवामण्ड ०० उंभाउनकर्ये १९ उंवामहि ०३ उंबहुर्ये ०८ उंगीर है भ उंद्या के विद्या में निक्य के प्रान्त प्रमुख । विद्या यनभः व्हार्यो अभेक व प्रमान क्लिन्सः व इसने मिथुर्गिहके त्ररा भारतिमानिक्य भारतिक्य यह त्रहिषरामित्र निम्म

०३१

म्यानकः उन्निम्यक्षणको भिन्भः ॥ उउः मण्डलन् ॥ मण्ड द्रकिना ॥ भावन भागमें यु रें ही सीभः भः यं ये हत्त्वित्र कहीं मन्द्रते भवेशसून राक्षण हेरान्मसम्बन्धभी जीने १ भविश्वम जीयभन्याम्भ जीवह ०:०: इत्युक्तिश्यम्भने निवस्याभ०:०: विश्वति मध्यक्रित यकि मिर्भयन्त्रभु क्रिक्ष्म् वमण्त्रणाः एक्त्वभभ्यसिक्ष विलिणक्षित्रे, उदाश्च मुक्ति वह सब्ना पर मार्थेन । एक दे विक्यम्यप्रमान्यिश्च यात्रभः नम्भुभव्ये विद्वः भिर्दे हें सुन्मे नभः भुक्त । उद्यक्तिक ॥ विकल् मुख्य बल् (भूके मानित्र मुक्ति मानित्र मुक्ति मानित्र मुक्ति मानित्र मुक्ति मानित्र मानित्र मुक्ति मानित्र मानित न एस न्यंना क्रियानेशाश्री कार्यानेशा क्रियाने क्रियाने य देर्दि हैं दें दं भवभायें से पाई व पक्ष प्राधिक ॥ विही भव उमेही किन्मा ही प्रभक्त ही भवाद्य ही भवक्र अपर ही भव भी निर्मा भारति है। भारत है। भारति है। कार्य के मार्थ के मार्य के मार्थ के मार्य के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्य के मार्थ के मार्थ के मार्य के मार्य के मार्य के मार्य के भाषात्रभ (छ चन्द्रने यएनभन्नभाषे देई क्रम्यू भं १३ विभन्तनभन् विभिन्नया विश्वाउँ भक्तया भंडाक्र भव्या भंडाक्र वर्ग विश्व उन् वक्रम् उत्रराज्य परमार हि भी पि कि विवर्ण से नियम निर्मान हरा

क्विनि मिवगरिं भिर्दिनि मीन भेग्मुण्यस्त्रिभिर्मा द्वानिश् 5 ७ विश्व वर्ग सम्प्रिया द्वार में प्राप्ति प्राप्ति निर्म प्रति वर्ग यरीवनिकार्विवरकार्विभाष्टलीन भ्राप्त्रायक्षक्राणजन्मिव मिन्द्र जा विक्रियनि मिन्द्रिये में उन्तरीने में हर्गित टमभिष्वकृत भारतिक्स्य भग्नमु भग्य विश्वभागः ह।।य च व्यानिक्ट टहुक्रेण्डा प्रभूण निर्य भएगा श्रियाप व्यापेडणेपे पिउने भारत स्रान्य भेण्य क्या विकल्ण हान नीममिक् ना वापे विजवे पुरमी किरव में व मुमान स्थि वश्चवित्र भेजन्य क्रिये प्रमास्त्र क्रिया मिर्गा वित्र अग्यभागितानाभाष्ट्रवाह पापस्यायहवर्षितिवनीऽयमभ उपण्यम भद्रनगक्रिश्च भ्रम्पंडय उन्यवन्त सहस्त्रनन्भ । थाग्त्रक्रासम्भवण्य पर्शित्व केक्य्क्यरान्नेच दिसेएए शिमीपास्थापिक्वणामुक्रिम्बाह्मं सीवास्म्ब जलपात्रम उपनिचत्वः उ॥ हर्वजण्य रेडेम्पिः प्रकृमेन भनः प्रकृम्य प्रिमुद्दे प्रमुख्यम् १० ॥ उउः विभिन्नि विव भडता ।। उउ मीपण्य विभल्तभे विज्ञानमण्यवि अविमायपुण्डे अविय

० ३३

भनक्य वि । । महायु । विकावाः क्वस्य वास्त्रस्थि। व्याभागान्याम् विष्क्षं भदिउभ्माभागाः हेरव्या मुद्रे उस्परलेक प्रकामवा कु अ वा दिव्य र तका निवान भड़ान भ्रम्भि करीका इल्प्रें के क्रिया , पड्य परवें विद्या भे के दें भी भ्राभिष्विव्यम्मिक उ मुख्यप्त्र कि क्वी भारति गुरु भूति त्रवंभियानी हती मानि क्रियानिनी मुर्ग अएने हरवरी भगान क्षर भाषात्रभागु विवस्तु श्वाचेरक नेसः उरक्र उर्ग न्मः वि म्यंदिकि रें हवः मंदेभक्र वश्रम्पम्पम्पामाः उद्यानिक हीभस्यमाने थ्र हिन्सार देसी भद्ध स्वामेन सुरु पालिः धिनक्र उ मिश्यम्परिस्व भएकि विस्तिन्स विभूतिया भारतिस् स्वयंत्रे नीक्षिण्डा प्रदेश के प्रमुख्य के प्रदेश किया है से प्रमुख्य के प्रदेश के प्रमुख्य के प्रमुख् लेगन्भ व्यक्तम् किभन्म भिष्क ग्राह्म तर्थिक विच्छ मकल कलक्षा किंद्र अपले जांच पश्चिममा ० । ज ज द भ पियु ले भ वितक श्राप्तुनाइ सुलेक्। (वक्रय क्ष्क्रत्विकाण लग्द्रमञ् क्लेर्नम भिर्विश्वकर्पार्यक्षिरं नीनरनक नूर्रियम तममाद्वभाद्रल निर्दे वर्जे दरभे उग्भ १ भव्राभि उ विद्वार्थ व

क प्राचि उद्येत्रं नाशी वस्ति निया उ मुक्सन प्रेक्ष भिक्ष पुण्यू र भा मन्यार्थिकितिथयुन्ने लेख्डा थिन्द्रिगं व्याभित्र्योग्य चन्नाभडं अच्यायं युलिनः १ ॥क्लक्ष्म्भराजन्म दिनिह इचि (भड़िका" ने ले क्या निया डे पुर्वे में प्रे कि क्षा प्रा भी भर्में रक्षालम् किश्वाल द्वालिक स्वीलभक्कायं वृत्त द्वित भीस्मित्रम् हो हद्यों रेभद्र है ॥ इज्ज वजा निक्र चिषुमारक्षिके उन्नां मीस्र उद्दर्भक्ष्य भिष्ठि एउपार श्रीणिहिः वक्रियेभवतिष्ठनभनभा अङ्गारिअङ्गार्थे मने पाइनभी सुरश परने विद्याध्यक्षेभयभी भ ॥ यम् हभ्यक् दक्क्ष्य वि विश्व विज्ञानिः भेत्रणाभुएने गएडितक्रिके ग्मीविध्व किं इन्ते भारतम्ब्रिकिरा कला श्रमद्रेभद्र इत्रक्रिनेश भिमन भा भूगत्रभे भेशाय भाग्य नियद्वित्रमन निभक्ष भाग्य वक् उपिभन्त्यं अर्डे अर्डे उपद्विने गनिधुभद्यक्षे गस्ति री. देभिन्पम्मिने चिभने :।। विवस्पेनी जलम् भिम्म् 000 ल भूक्यने श्राम प्रायद्वद्वपामें हत्त्य भने शिल् था विक्रा यदानि गर्ने इस्किम्य स्मायनिएन तम्भू सुक्ष्य विनण्य

१ धललि इत्सनं प्यापडी दिनेशभी उ॥ मञ्चन द्वान हु रुभा नभूग भूष भस्पन श्र क्रकालभा पार्यक्रमस्पर्वश्वाः श्रम्मक्रवर्वभा ०९ विमुद्धीडभ(विमुभयं है उन्युक्तंयुर्भा भक्तं नियुलं माउँ मस्मान्य हरवना ०३॥ उडेहे वन् क्रमाना कामान्य विक मक्रवन कि मले दि उक् भेस भाषा दन्य से द ० १०कवन भाष्ट्रमे बनांद १५ है । १ एक बन ल निर्देशिंड नभाभ मान्द्रहै । अ अ इस्टे मेक राजे कर न न ण ने संदेशिक है मा ने किसाब के दिर ने कारियां पर वाउउए के का जि पश्चितिका के रेजिस मारे मेक्व के निया मिल्मिय वर्टिश्व ति एकर्ज गाउँकः उदिने स्त्रभस्र रंचन ग्रेमीयनं अभापने रिया हुए मान्तु दंशाउक दिनेयन

लिम उद्दर्श प्रमानिस्य स्वर्षा क्रिया अध्या भारत भवाक्ग्राम्क्रिया ३ माउए माउच्या उद्गार्थियान भवाकार भयक रेखन भम्हरू - गाउँ ए वर्डके नेखें वर्डक भवका में बहुत प्राप्ती भवकारण ने मा करनक साम राग्या महिलेयन पर्में लीभाउदिहाँ अलिंडाभार भारत ने महिलेवन बनेन् अपा विलेगन् विभायहद्मुलग्याभुग्द्वभासुरुप्त । मार्टिक्वमन सर्भारिभक्षित मार्थिक मार्ति निर्मार सेन्नेन इत्भारत ३ ॥मबहेरवानं धीपनंग ममापन्भा वि हरवसाभ उद्म कारियार्गिक रहार्गिमिडिउ अब कार्मिन पारित्र की अलयमानि विक्रम् भित्र महेरावः भाष्म् अदिश्वक्रिक्र में भस्वतः १ मार्किलिंगे निरंका किंगरी स्दिउश्याक गिर्हा मा भारत ने मा भारत वे वेश्वरी भारत है यः ज्ञा ग्ल्यो के नेन्द्रभव्याप्य भवक्ष्य हो ग्रेन दुन भ्रिमेपा वर्ग्य भित्रमुक् उभ्रेडेक्चेनुक् केर इसम्भित्रय ल्लार्भिष्य विकालसङ्गेरियः असून्य भादिरेयये । सा अस्ति

OF DA

क्राजिक्र मिर्डेडे से किल्ड क न भेड़ा मा कि कार के कि ल अप्य अभिकृष ३॥ मुख्यी भाना अभिभाग अभिभाग । उ स्वी गुउचत्रभपद्रात् मक्रभाना थिउंक्र क्रभान स्याग्मिक व म श्रामान मिर्थाएयगण्यामिनिकोश्री अवस्म दिनभव्या अधियव। दिशमलनिहास्य भद्दा चरवण्डनाम क्रिकारवङ्ग विन्रथथद्रिमा विस्तान्यक मेहिए मिन्ह का भद्र वीदा मिन्धन्य ए प्रिंड इंग्डिम्या भीक भंडमानिश्मद्वाल प्राप्ति भयग्वदन्दि भिक्र न"(व्यादा मित्रद्रभू भदा क्रिया भवानक्षा क्रिथा नम् ठेक ्भक्षके भगीयम्बद्धीमितिभामके व कति मद्रयन्तर इसा मारा पारा मारा महारूप में वेष्ठ्र भग अल्प्डि विचार्तनगडानि इने विभक्तिनी रेंडि व्याद्येण विकल्ता प्रपार्थि माने वृद्धा वि भल महामस्पार या हक्तार्त्त भर विभाग्नवर्ति भरामव पारवदनक्षेत्र मिर्गियं क्रिक्त भ एतिपश्चिम ॥ निम्बली

प्लस्नडम् क्यास मल्यान्य प्रति । त्राप्य कर्मा वर्षे स्वर्धात्र । त्राप्य कर्मा वर्षे स्वर्धात्र । त्राप्य कर्मा वर्षे निएलस्मिन्द्रवारा निक्के निष्टा । निष्टम के निष्टि निष्टि । यह यह के उपन एक पर्व मुभ्य करा नयन ने भद्रम् म् क्रिय क्नक्रक भि 似的多。 क्रवः अपने कुगावचन्त्रिक भवालक्षरक्षिक एक्ट्रीसिकक्लेमानिभाष क्रेडमे अप्रिक्यते ॥ उच्चिक्में एक्र अंतिमं अप्राचन्त्र प्र कारत्यम्भगायद्वष्ट्रिभक्रम् क्रम्कक्रमातिन् हे ग् अन्यदिभवाकिन्य अञ्चार्यन्त्र गलमा व्यक्ति म नियात्मा निर्देशनिविक्तिनी मित्रुप्रियोग्यामिक ान्बयक्त मान्यक्त मान्यक्त अग्रमात्र द्वार वि वक्सभूष्रे विक्र विकास का अग्र भवाभा अभाषा दे भया यस्त्रीतिकः प्रमान्यानिविधेने निक्रियाः नर्का अद्विद्धान्त्रम् मुन्द्रिभानभाः मानित्रवत्रभिष्याः भार्थ लिया: मिडीमिन् । अभिनि निभाग्नेभाग्ने भिन्ने । क्रियाना ल नहम्भद्रतान्त्र महम्भद्रतेष्ठ्रथः महम्भद्रतेष्ठ्रने प्रकेर नि स्यत्वनाजील न्यों दे नया के न्यों दे नया के न्या कर स्था 动。 स्टननम् अत्याशामिवः मनुः मिवः मनुः । मि 0.30 मिने छीत्रः मिने छत्रि छन् भया छ्या इस छ्या इस छ्या इसि CC-0. In Public Domain. Dig 10d by eGangotri

भद्रम्बन्यव्याप्त्रम् भक्त्रम् ज्ञान्त्रम् याद्रम्भूद्रम् उभेप नवं गरान्यं गरान्यं गरान्यं गरान्यं गरान्यं गरान्यं व्यामाना मिनिरिपारमंसिरि वैद्यालिक निग्रम्भ मार्चिरिरिन्ति ग्राथच्डी भूगमे निष्विक्षि ॥ १॥ दरमा में देशदारे विश्व थे भरद्र क्षीविधन्य किरियनेवर्षिया क्वभी सक्रिभिय दूर्म हर्गाए लेकपलाष्ट्राणन्भविभाष्ट्रय विश्वष्ठित अवन्त्र विद्यादिकः भागिताः अस्विभागित्रभागाः चित्रणक्रिक्तिः भिवित्रप्रम निर्हेश्येह्र १ पर्यम्भक्ष एडिएड के उन्नाया प्रमा प्रकार पलनाभनवक्ष्मिम नवस्मिभ्यत्त्वभा अल्क्ष्यंत्रस्मिमा मध्य पामस्य विश्व प्रकृति । यह स्वर्ध । यह स्वर्ध । पानक । रिमाय न्मक्षरकिरिनमः एउनभेशक्षणउगुण क्रिक्म द्वाउपारया न्यभवन विभाविक ले म्याविक इनि-पितः हैरवणाउस नर्स उसपरन्नक्रमव्परवार्थिय च्रिन भएन भग्ने दिराष्ट्रिय प्रेंड म्मिराष्ट्रिक विकार

पंसक्तकं भवसमें भीनमंभ मुप्रथ भिक्षं भित्रप्तक्षि ॥ एवं इसे निर्देशकी की श्रामा है रेस कि मारी है रेस ग्रेलहे वेश्ववीदी मा उद्याहिक पण्डी भी भक्षालम हैक रेज्यी दी - दीयां हैरे मानुष्ट - दी संख्य हेर्य से अड लड़ा 3 ॥ भोटे ्र चींभरी सुरी भदिउं श्रम्याहे उन्धी थक्त्रमं परि भारती भनभूरे छ। भक्ति है उन्हें अपनि भारती भारती स्थानिक के परि भारती स्थानिक स्यानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्य भावकरोति कलाने वी जाः मार्थियमे । च्या च्यानिपाः हेरन्ग्रेस ग्रंस मानिस्य निभित्र भिरमानिक्यी क्राइल्थ्य के उरिमयउपरुष प्रतिक्षक्मन कि वे भद्र भागी भागका ्यनिकारणा परितियया भारति विष्मुण उर्द्रा हर्गा करि कुणि दिश्रम्भरम्ने भवाक्ष्यक्रिक्षिण हर्ती माड क्रिथाने नीस्रिअलनं हे स्वर्धीयमञ्जूष्णन् अन्ति अलने भिर् इंस्प्तिले । ज्वस्यु ॥ अध्यात्रक्ति । पिर्ड हर्म्बाइया मृद्यू मी मुद्भतिभाउँ दिनेष्कं श्रयण्यभा उद्देक् उद्दर्णश्रयण्यभा से उद्दे शेष्मिक ॥ कि चन्डिम्मभथयानि भ कर्ध्यू एगाउन्थ पटि उरः प्रयान्तनभर भक्रिन मधु उदक्रम भन्छः प्रिक्षिपस्त्रिति । भन्दे । भन्दे । भन्दे । भन्दे । भन्दे । भन्दे । भाष्टि भ्वा ०९।१८॥ भन्न प्रदि लाइस्सं पांडे अस्व भी पनंसा: ००॥ लिह्नां मही एडि नीलक्षन का इना) ब्ह्यां ॥ बुह्रस्यु हर्म्यु ॥ ॥ उ भिर्मिण नर् कार्ती लिड रायान्मिल असेक् थिसे वा भी भया एड असेक के





